

M. A. Second Semester

First paper

Physical landscape

BY

Dr. Shivanand Yadav

Assistant Professor and Head

Department of Geography

Harishchandra P. G. College, Varanasi

आकारजनक प्रदेश या आकारजलवायु प्रदेश या संरचना विकासी प्रदेश
Morphogenetic Regions OR Morphoclimatic Regions OR Morphogenetic Regions

आकारजनक प्रदेश या आकारजलवायु प्रदेश की संकल्पना वास्तव में जलवायु भू-आकारिकी की निम्नलिखित मूलभूत संकल्पना पर आधारित है :-

“ प्रत्येक २ वास्तविक प्रक्रम अपना जलग स्थल रूप निर्मित करता है और प्रत्येक प्रक्रम विशेष जलवायु का प्रतिकर है। ” अर्थात्

खास प्रकार की जलवायु में खास प्रकार के प्रक्रम सक्रिय होते हैं जिनके खास तरह के स्थलरूप निर्मित होते हैं।

सायर (Sauer-1925) जिन्होंने स्थलरूपों का संबंध किसी प्रक्रम से न जोड़कर, जलवायु प्रदेश से जोड़ने का प्रयास किया। इनके अनुसार यदि जलवायु प्रदेश के साथ स्थलरूपों का अध्ययन करें तो प्रक्रम अपने आप स्पष्ट होने लगेगा। इसी आधार पर सायर ने 1925 में बताया कि “ विशेष प्रकार की जलवायु में विशेष प्रकार के स्थलरूप निर्मित होते हैं। ”

संरचना विकासी प्रदेश (आ.ज.प्र.) वह होता है जिसमें विशेष जलवायु और उपरदन की दशाएँ; भू-आकृतियों की उत्पत्ति और विकास के विश्लेषण में प्रधान रहती हैं। इस प्रकार ये दशाएँ उस क्षेत्र के बुद्ध प्रादेशिक लक्षण प्रदान कर देती हैं, जो इसके क्षेत्रों से प्रक्रियाओं और दशाओं में वृथक गुणों वाले होते हैं। सरल शब्दों में - संरचना विकासी प्रदेश का तात्पर्य जलवायु की दशाओं के एक विशेष समुच्चय के अन्तर्गत त्रिआशील विशेष भू-आकृतिक प्रक्रियाओं के प्रभाव से विकसित हुई दृश्यभूमि से होता है जिसके भू-आकृतिक लक्षण जलवायु दशाओं के समुच्चय में विकसित दृश्यभूमि के लक्षणों से सर्वथा भिन्न होते हैं।

सेपर तथा फ्रीस (Friesse-1935) ने रासायनिक उपसय का गहन अध्ययन किया। इनका विचार है कि - “ अर्णाई जलवायु में रासायनिक उपसय आर्द्र जलवायु की अपेक्षा अधिक होता है। ”

यूरोप में लुदेल (1944-48) ने प्रस्तावित किया, कि पृथ्वी तल पर इस प्रकार के जलवायु-आकृतिक प्रदेश हैं जिनको वे फार्मिक्लेसन (Formkreisen) अथवा आकारजनक प्रदेश कहते थे। आकारजनक प्रदेश (सं.वि.प्र.) की संकल्पना का यह अर्थ होता है कि “ जलवायु की दशाओं के एक विशेष समुच्चय के अन्तर्गत विशेष भू-आकृतिक प्रक्रियाएँ प्रधान होंगी और उस दृश्यभूमि को ऐसे लक्षण प्रदान करेंगी जो उस क्षेत्र की दूसरी भिन्न जलवायु में विकसित हुई दृश्यभूमि से वृथक कर देंगे। ”

बिशेट (Birnot) ने 1968 में आकारजनक प्रदेश की व्याख्या

करते हुए लिया है कि - यह एक ऐसा प्रदेश होता है जो उन विभिन्न जलवायवी कारकों द्वारा अंकित किया जाता है जो भू-आकृतिक, प्राकृतिक, आदिवासी का एक स्वरूप समुच्चय उत्पन्न करते हैं। और प्रतिष्ठित में जलवायु कारकों द्वारा जलवायु की सभी भू-आकृतिक प्रक्रियाएँ एक सुस्पष्ट दृश्यशक्ति को उत्पन्न करती हैं जो अन्य प्रदेशों में बिल्कुल प्रथक दिखायी देती हैं।

पेल्लियर के अनुसार आकार जनक प्रदेशों का वर्गीकरण; Classification of Morphogenetic Regions According to Peilier; - 1930 में पेल्लियर ने आकार-जनक प्रदेशों की संकल्पना को व्यवस्थित रूप दिया तथा इनका वर्गीकरण आकारमितीय उपकरणों के आधार पर करने का प्रयास किया। इस हेतु उन्होंने दो जलवायु मापक (Climatic Parameters) का चयन किया।

- | | |
|------------------------|--------------------------------|
| 1. औसत वार्षिक तापक्रम | Mean Annual Temperature. (°F) |
| 2. औसत वार्षिक जलवर्षा | Mean Annual Rainfall (inches.) |

इस तरह पेल्लियर ने आकार-जनक प्रदेश का निर्धारण महत्वपूर्ण प्रक्रम के आधार पर किया न कि स्थलरूपों की ज्यामिति के आधार पर। इनका विचार है कि एक विशेष प्रकार के प्रक्रम एक विशेष प्रकार की ही जलवायु में पाये जाते हैं। इन्होंने कौन-कौन से आकार-जनक प्रदेशों (1. हिमानी 2. परिहिमानी 3. बेरियल 4. सागरीय 5. रेगल 6. मॉडरेट 7. सवाना 8. अर्द्धशुष्क 9. शुष्क) का निर्धारण किया है। इनका जलवायु तापक्रम तथा वर्षा के आधार पर किया गया है।

1. हिमानी आकार-जनक प्रदेश :- इस आकार-जनक प्रदेश का निर्धारण 0° - 20° फारेनहाइट औसत वार्षिक तापमान तथा 0-45 इंच औसत वार्षिक वर्षा के आधार पर किया गया है। इन्होंने बताया कि इसमें हिमानी अपरदन अधिक सक्रिय रहता है। कहीं-कहीं पर चक्र के अन्त में निवेशन तथा पवन के कार्य भी महत्व पूर्ण हो जाते हैं।

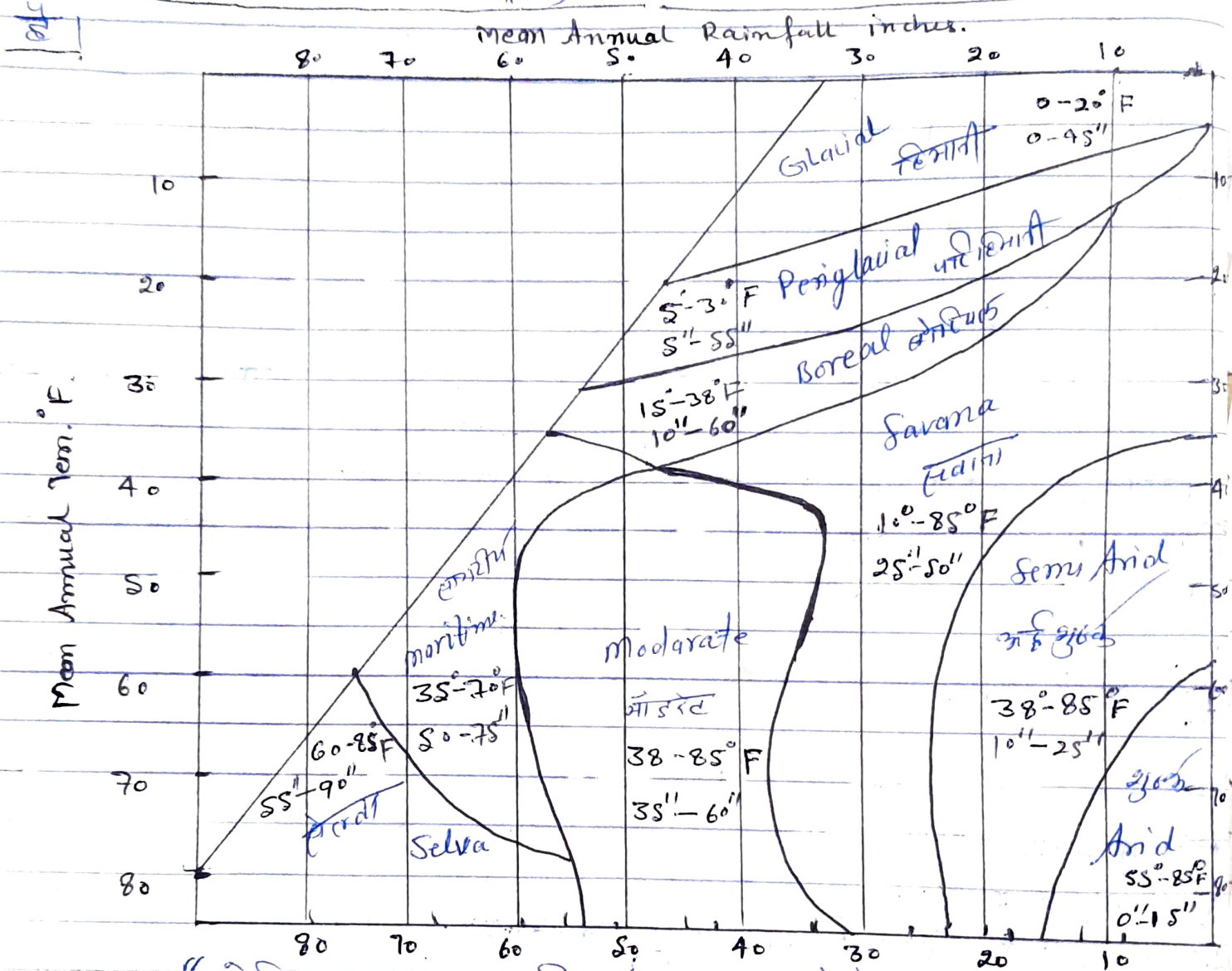
2. परिहिमानी आकार-जनक प्रदेश :- इस प्रदेश में तीव्र सामूहिक संचलन का कार्य तीव्र गति से होता है। वायु का कार्य इस प्रदेश में सामान्य से कभी तीव्र कभी मन्द होता है। प्रवाही जल का कार्य इस प्रदेश में -भूत होता है। बृदासर्पण की क्रिया उल्लेखनीय होती है। इसका विभाजन 5° - 30° तापमान तथा 5-55 इंच औसत वार्षिक वर्षा के आधार पर किया गया है।

3. बेरियल आकार-जनक प्रदेश :- इस प्रदेश का निर्धारण 15° - 38° F औसत वार्षिक तापमान तथा 10° - 60° औसत वार्षिक वर्षा के आधार पर किया गया है। तथा इसकी प्रमुख भू-आकृतिक विशेषताएँ सामान्य तुषार क्रिया, सामान्य सै-भूत वायु कार्य तथा प्रवाही जल का सामान्य कार्य हैं।

4. सागरीय आकार-जनक प्रदेश :- इसका निर्धारण 35° - 70° F औसत तापमान तथा 20° - 75° औसत वार्षिक

वर्षा के आधार पर किया गया है। इसकी प्रमुख भू-आकृतिक विशेषताएँ तीव्र सामूहिक संचलन तथा सामान्य से तीव्र सवाही जल का कार्य हैं।

5. सैला आकार जनक प्रदेश :- इस प्रदेश की प्रमुख विशेषता यह है कि यहाँ तीव्र सामूहिक संचलन होता है परन्तु पवन की क्रिया नहीं होती। इस प्रदेश की सीमा रेखा $60^{\circ}-85^{\circ}F$ औसत वार्षिक तापमान तथा $55''-90''$ औसत वार्षिक वर्षा के आधार पर निर्धारित की गयी है।



"पेंडिटर द्वारा सन्तुलित आकार जनक प्रदेशों के लिए सम्भावित तापमान और वर्षा की दशाओं का सीमांकन।"

6. मॉडरेट आकार जनक प्रदेश :- इस प्रदेश का सीमांकन $38^{\circ}-85^{\circ}F$ औसत वार्षिक तापक्रम तथा $35''-60''$ औसत वार्षिक वर्षा के आधार पर किया गया है। इस प्रदेश में सवाही जल का कार्य तीव्र होता है। इस प्रदेश के शीत भागों में तुषार अपक्षय की क्रिया देखने को मिलती है तटवर्ती भागों को दौड़कर वायु का कार्य न्यून होता है।

7. सवाना आकार जनक प्रदेश :- $10^{\circ}-85^{\circ}F$ औसत वार्षिक तापक्रम व $25''-50''$ औसत वार्षिक वर्षा के

आधार पर इस प्रदेश का सीमांकन किया गया है। इसमें वायु का कार्य सामान्य तथा पृथ्वी जल का कार्य कभी तेज तथा कभी मन्द होता है।

8. अर्द्ध-शुष्क आकार-जनक प्रदेश: - 38° - 45° F औसत वार्षिक तापमान तथा $10''$ - $25''$ औसत वार्षिक वर्षा के आधार पर

इस प्रदेश का विशासन किया गया है। इसकी प्रमुख भू-आकृतिक विशेषताएं तीव्र पवनकार्य और सामान्य से तेज जल का कार्य होता है।

9. शुष्क आकार-जनक प्रदेश: - इस प्रदेश की प्रमुख भू-आकृतिक विशेषताएं तीव्र पवनकार्य तथा जल का कार्य - घुनघुन।

इसका सीमांकन 55° - 85° F औसत वार्षिक तापमान तथा औसत वार्षिक वर्षा $10''$ - $15''$ के आधार पर किया गया है।

" प्रादेशिक भू-आकृति विज्ञान " Regional Geomorphology.

(अध्ययन के)

भू-आकृति विज्ञान के दो पक्ष (उपांग) हैं। 1. क्रमबद्ध भू-आकृति विज्ञान (Systematic)

2. प्रादेशिक भू-आकृति विज्ञान (Regional)

क्रमबद्ध भू-आकृति विज्ञान में विभिन्न संकल्पनाओं की प्रक्रियाओं और निष्कर्षों को क्रमबद्ध प्रकार से नियोजित किया जाता है। जबकि प्रादेशिक भू-आकृति विज्ञान के अध्ययन में भूतल के किसी प्रदेश को अध्ययन का आधार मानकर, उस क्षेत्रीय इकाई में होने वाली सभी भू-आकृतिक प्रक्रियाओं का संश्लेषण (Synthesis) अध्ययन होता है। अर्थात् उस क्षेत्र में भू-क्षेत्र में असंगी कारकों की प्रक्रियाओं का समन्वित विश्लेषण किया जाता है, जो उस प्रदेश की भू-आकृतियों के निर्माण और परिवर्तन में किसी प्रकार भी क्रियाशील होते हैं।

समस्त क्रमबद्ध प्रकरणों का प्रयोग प्रादेशिक अध्ययनों के लिए होता है और प्रादेशिक अध्ययन ही भू-आकृति विज्ञान के चरम विकास का पक्ष है। क्रमबद्ध अध्ययन तथ्यों के विश्लेषण पर आधारित होता है जबकि प्रादेशिक भू-आकृति विज्ञान में तथ्यों का संश्लेषण (Synthesis) और समाकलन होता है।

पृथ्वी तल पर कोई ऐसा इकाई-क्षेत्र, जिसमें कोई एक समान ऐसे भू-आकृतिक अभिलक्षण मौजूद हो, जो उस समस्त क्षेत्र की समरूपता प्रदान करते हों। और समीपवर्ती क्षेत्रों से भिन्न बनाते हों, भू-आकृति विज्ञान के प्रादेशिक अध्ययन के लिए निश्चित किया जा सकता है।